INDIAN SCHOOL AL WADI AL KABIR

Class: VIII	Department: Hindi (2nd Lang)	29.04.24
Question Bank	Topic: -पाठ- 8 लाख की चूड़ियाँ	Note: Pls. write in your Hindi note book

प्रश्नोत्तर

प्रश्न -1 वस्तु-विनिमय क्या है? विनिमय की प्रचलित पद्धति क्या है?

उत्तर - वस्तु विनिमय से तात्पर्य लेन-देन के लिए रूपए-पैसों के स्थान पर एक वस्तु का दूसरी वस्तु से क्रय-विक्रय करना है। जिस तरह से बदलू लाख की चूड़ियों के स्थान पर अनाज व कपड़े लिया करता था। वस्तु विनिमय की पद्धति गाँवों में प्रचलित है। यहाँ लोग अन्न के बदले अन्य किसी भी (खाने पीने व कपड़े) वस्तु से आदान-प्रदान कर लेते हैं। इस समय इस पद्धति के स्थान रूपए-पैसों ने ले लिया है।

प्रश्न 2- बचपन में लेखक अपने मामा के गाँव चाव से क्यों जाता था और बदलू को 'बदलू मामा' न कहकर 'बदलू काका' क्यों कहता था?

उत्तर - लेखक के मामा के गाँव में लाख की चूड़ियाँ बनाने वाला कारीगर बदलू रहा करता था। वह लाख की बहुत सुन्दर चूड़ियाँ बनाता था। परन्तु लेखक के लिए वह लाख की रंग बिरंगी सुन्दर गोलियाँ बनाकर दिया करता। जिसके कारण लेखक सदैव बदलू के पास जाता और यही कारण है कि लेखक को उसके मामा का गाँव अच्छा लगता था। बदलू को समस्त बच्चे ही बदलू काका कहकर बुलाया करते थे । इसलिए लेखक ने भी उनको काका कहना ही उचित समझा।

प्र॰3 बदलू के मन में ऐसी कौन-सी व्यथा थी जो लेखक से छिपी न रह सकी।

उत्तर – मशीनीकरण के आने तथा काँच की चूड़ियों के प्रचलन एवं गाँव में औरतों के काँच की चूड़ियों के पहनने के कारण बदलू का व्यवसाय बिल्कुल बंद हो गया था। उसकी आर्थिक स्थिति भी ख़राब हो गई थी। अपना पैतृक काम खो देने की व्यथा लेखक से छिपी न रह सकी।

प्रश्न-4 मशीनी युग ने कितने हाथ काट दिए हैं।'- इस पंक्ति में लेखक ने किस व्यथा की ओर संकेत किया है?

उत्तर-लेखक ने उन कारीगरों की तरफ़ संकेत किया है जो हाथ से बनी वस्तुओं से अपना जीवनयापन करते हैं। आज के मशीनी युग ने उन कारीगरों के हाथ काटकर मानों उनकी रोटी ही छीन ली है। उन कारीगरों का रोजगार इन पैतृक काम धन्धों से ही चलता था। उसके अलावा उन्होंने कभी कुछ नहीं सीखा था। वे पीढ़ी दर पीढ़ी अपनी इस कला को बढ़ाते चले आ रहे हैं और साथ में रोज़ी रोटी भी चला रहें हैं। परन्तु मशीनी युग ने जहाँ उनकी रोज़ी रोटी पर वार किया है, वही दूसरी ओर इन बेशकीमती कलाओं का अंत भी किया है। यही वह व्यथा है जो लेखक व्यक्त करना चाहता है। ऐसे कारीगर कला होने पर भी बेकार हो गए और उनकी रोज़ी रोटी भी खत्म हो गई।

प्र॰5 मशीनी युग से बदलू के जीवन में क्या बदलाव आया?

उत्तर – मशीनी युग के कारण बदलू का सुखी जीवन दुख में बदल गया था। गाँव की सारी औरतें काँच की चूड़ियाँ पहनने लगी थी। बदलू की कला को अब कोई नहीं पूछता था। उसकी चूड़ियों की माँग अब नहीं रही थी। इसी कारण शादी-ब्याह से मिलने वाला अनाज, कपड़े तथा अन्य उपहार उसे नहीं मिलते थे। उसकी आर्थिक हालत बिगड़ गई जिससे उसके स्वास्थ पर भी बुरा असर पड़ा था।

प्रश्न 6 बदलू की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन करो।

उत्तर- बदलू स्वभाव से बहुत ही सीधा साधा व्यक्ति था। वह कभी किसी से लड़ाई-झगड़ा नहीं करता था। वह लेखक से खूब स्नेह करता था। वह चूड़ियों को वस्तु विनिमय के तरीके से बेचता था। कभी-कभी शादी विवाह के अवसर पर वह जिद्द पकड़ लेता था। उसे काँच की चूड़ियों से चिढ़ थी। बदलू बहुत ही मेहनती और स्वाभिमानी था।बदलू का व्यक्तित्व सुदृढ़ तथा कभी हार न मानने वाला था।

अति लघु प्रश्न

प्रश्न 1 - बदलू कौन सा कार्य करता था?

उत्तर- बदलू लाख की चूड़ियाँ बनाने का कार्य करता था।

प्रश्न 2 बदलू और लेखक एक दूसरे को क्या कहकर संबोधित करते थे?

उत्तर- बदलू लेखक को 'लला' और लेखक उसे 'काका' कहकर संबोधित करते थे ।

प्रश्न-3 बदलू को किस बात से चिढ़ थी ?

उत्तर- बदलू को काँच की चूड़ियों से चिढ़ थी।

प्रश्न-4 विवाह के अवसर पर किस का मूल्य बढ़ जाता था?

उत्तर- विवाह के अवसर पर लाख की चूड़ियों का मूल्य बढ़ जाता था।

प्रश्न-5 बदलू ने किस के विवाह का आखिरी जोड़ा बनाया?

उत्तर- बदलू ने जमींदार की बेटी के विवाह का आखिरी जोड़ा बनाया था।

प्रश्न -6 बदलू की बेटी का क्या नाम था?

उत्तर- बदलू की बेटी का नाम 'रज्जो' था।

प्रश्न-7 लाख की चूड़ियाँ ' पाठ के लेखक कौन हैं ?

उत्तर- लाख की चूड़ियाँ ' पाठ के लेखक कामतानाथ हैं ।

प्रश्न-8 लेखक को अपने मामा के गाँव जाने का आकर्षण क्यों था ?

उत्तर- लेखक को अपने मामा के गाँव जाने का आकर्षण था क्यों कि लेखक को वहाँ लाख की गोलियाँ मिलती थीं ।

प्रश्न- 9 अपने पिता की बदली शहर में होने के कारण कितने साल तक लेखक अपने मामा के गाँव नहीं जा सके ?

उत्तर- अपने पिता की बदली शहर में होने के कारण आठ से दस साल तक लेखक अपने मामा के गाँव नहीं जा सके ।

प्रश्न-10 जनार्दन कौन था ?

उत्तर- जनार्दन लेखक थे ।

==